

IIJ Impact Factor : 2.193

ISSN-2349-364X

वेदाञ्जली

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित शाण्मासिकी शोध पत्रिका
(An International Peer Reviewed Refereed Research Journal)

वर्ष-६	अंक-१२	भाग-४
जुलाई-दिसम्बर, २०१९		

प्रधानसम्पादक
 डॉ रामकेश्वर तिवारी
 असिस्टेन्ट प्रोफेसर, श्री बैकुंठनाथ पवहारी संस्कृत महाविद्यालय
 बैकुंठपुर, देवरिया

सह सम्पादक
 श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशक
 वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी
 वाराणसी

◆ किरातार्जुनीये तद्वितवृत्तेरर्थवैज्ञानिकत्वम् मनीषकुमारज्ञा	220-228
◆ मध्यकालीन स्त्री-लेखन व अभिव्यक्ति के स्वर पूनम प्रसाद	229-232
◆ हठयोग में कुण्डलिनी का स्वरूप सूरज-प्रकाश जोशी	233-236
◆ शृङ्गारस्य सर्जनात्मकमध्ययम् <i>Dr. Menakarani Sahoo</i>	237-240
◆ वर्तमान परिदृश्य में संत साहित्य की प्रासंगिकता जय प्रकाश विश्वासी	241-244
◆ प्रगतिवादी काव्यधारा में श्रमिकों का हृदयद्रावक वित्रण निधी कुमारी	245-249
◆ अरुण कमल की जनपक्षधरता : 'पुतली' में संसार के संदर्भ में पूनम कुमारी	250-254
◆ हिन्दी कथा साहित्य में मनू भंडारी के उपन्यासों का योगदान अनिल कुमार यादव	255-257
◆ शैव दर्शन में प्रमाण विच्छन का स्वरूप अश्विनी कुमार	258-263
◆ संस्कृत चम्पू साहित्य एवं विहार डॉ आमा तिवारी	264-266
◆ गीताशांकरसाथ में ज्ञान का स्वरूप डॉ अनीता लोचिव	267-270
◆ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में स्वराज्य दल का योगदान डॉ कंचन कुमारी	271-273
◆ गीतशङ्करकाव्योपरिगीतगोविन्दस्य प्रभावः समीक्षणम् डॉ अर्चना कुमारी	274-276
◆ विवेकानन्द और वेदांत डॉ शशि रंजन त्रिपाठी	277-283
◆ योग अंतराय एवम् चित्त प्रसाधन के उपाय <i>Bhavika Joshi & Dr. Brijesh Singh</i>	284-288
◆ ग्रन्थसम्पादनशास्त्रस्य प्रमुखलक्षणानि विदुषि सुवर्णा हेगडे व <i>Dr. Vinaykacharya Namannavar</i>	289-290
◆ संस्कृत काव्यशास्त्र में अलंकार रिद्धांत डॉ कनक लता कुमारी	291-293
◆ वास्तुशास्त्रदृष्ट्या कक्षविन्यासविधिः डॉ रश्मिचतुर्वेदी	294-305
◆ 'पाँच आँगनों वाला घर' और भूमंडलीकरण रेखा साह	306-311

वास्तुशास्त्रदृष्ट्या कक्षविन्यासविधि:

डॉ रश्मिचतुर्वेदी*

वास्तुशास्त्रस्य प्रन्थेषु भवने कक्षनिर्माणं दिशः स्वाभावानुसारं गुणधर्मानुसारं च तस्याः प्रकृतिवत् गतविधिं सशक्तं निर्माय तथा च व्यवस्थितरूपेण सञ्चालनाय उपयुक्तं स्थलं कथयते। वस्तुतः वास्तुशास्त्रं प्रत्येकं दिशं प्रकृते: एवज्च तस्याः गुणधर्माम् अधिकतमोपयोगाय तस्याः दिशः सम्मतकक्षव्यवस्थायाः निर्देशं प्रदत्ताति। यस्याः प्रभावेण मनुष्यैः स्व-समस्तगतिविधीनां व्यवस्थापनं सम्यग्गृहेण कर्तुं शक्यते।

वास्तुपुरुषः सदैव भूमौ निवसति इयमस्माकं मान्यता अस्ति। एकस्मिन् वार्गाकारे (मण्डले) वास्तुपुरुषस्याकृतिः अनेन प्रकारेण स्थितं मन्यते यत् ईशानकोणे (उत्तरपूर्वदिशोः) तस्य शिरः, नैऋत्यकोणे (दक्षिणपश्चिमदिशोः) पादौ, शरीरस्य अन्ये भागाश्च अस्मिन्नेव वर्णं विभिन्नभागेषु अवस्थिताः वर्तन्ते। पञ्चचत्वारिंशदृतेवताः वास्तुपुरुषं गृहीत्वा अस्यां स्थितौ स्थापयन्तः सन्ति, स्व-स्वस्थितेः अनुसारं विभिन्नक्षेत्राणां नियन्त्रणं कुर्वन्ति। वर्णः (मण्डलः) लघुकायः दीर्घकायो वा भवेत्, उपविभागाः चतुःषष्ठिः एकारीतिः वा भवेत्; परमस्य नियन्त्रणकर्तृणां देवतानां संख्या सदैव पञ्चचत्वारिंशदेव भवति। तेषां सापेक्षिकस्थितिः अपि सैव भवति, केवलं तस्य क्षेत्रविस्तारोऽधिको जायते। एतेषु महत्त्वपूर्णप्रमुखदेवताः वर्तन्ते ये मुख्यादिशामधिपतयः तस्य क्षेत्रस्य नियन्त्रणकर्तारश्च वर्तन्ते। ते च -

देवता:	विक्षयतयः	कारकाः (नियन्त्रणम्)
इ॒रः	पूर्वा	समग्र-समृद्धिः उत्तराश्च
अग्निः	आग्नेया	अग्निः तेजश्च
यमः	दक्षिणा	मृत्युः
दानवः	नैऋत्या	शुद्धता स्वच्छता च
ब्रह्मणः	परिचमा	जलं वर्षा च
वायुः	वायव्या	वायुः
कुबेरः	उत्तरा	धन-सम्पत्तिः समृद्धिश्च
ईश्वरः	ईशाना	धर्मः आराधना मोक्षश्च
ब्रह्मा	मध्यभागः	सृष्टिः जनकः अध्यात्मज्ञानञ्च

इमे देवताः स्व-स्वक्षेत्रस्य अधिपतिरूपेण विराजन्ते। सौरमण्डले स्थिताः वातावरण-प्रकृत्योः अनुसारं विभिन्नावयवानां प्रतीकस्वरूपाश्च विद्यन्ते। अतः तेषामवयवानां नियन्त्रणकर्तारः मन्यते। एतदर्थं भवनं निर्मातुं भूषणदृश्यं चयनसमये, गृहनिर्माणकार्यारभादिषु अवसरेषु देवतानां महत्ता: समर्यन्ते। तथैव गृहे विविधकार्याणां कृते भिन्न-भिन्नप्रकोष्ठाः एतादृशां दिशि विशिष्टस्थितौ च निर्माणीयाः यत् तेन कार्येण तत्क्षेत्राधिपतिः देवता रुद्धं न भवेत् प्रत्युत् प्रसन्नं भूत्वा स्व-नियन्त्रस्य सर्वासां भौतिकवस्तुनाम् ऊर्जनां वा लाभः गृहस्वामिने प्रदद्युः, येन कारणेन सः परिवारेण साकं गृहे सुखपूर्वकं वसितुं शक्नुयात्। यस्याः दिशाधिपतिः या देवता तस्य नियन्त्रणे यः पदार्थः ऊर्जा वा अस्ति तस्य स्वभावानुसारं प्रकृत्यानुसारञ्च कर्त्यां दिशि कस्मै कार्याय प्रकोष्ठः कर्त्यां स्थितौ निर्माणीयः, कर्त्यां स्थितौ च न निर्माणीयः, अस्य स्पष्टोल्लेखः प्राचीनशास्त्रेषु प्राप्यते। अनेन सहैव यदि कर्शनं प्रकोष्ठः निषिद्धक्षेत्रे निर्मायते चेत् तस्य सम्भावितदुष्परिणामाः अप्युक्ताः वर्तन्ते। विश्वकर्माप्रकाशे कथयन्ते-

ISSN :- 0976-4321

वास्तुशास्त्र अध्ययन माला-द्वादश पुस्तक

वास्तुशास्त्रविमर्श

सन्दर्भित एवं मूल्याङ्कित शोधपत्रिका

प्रधान सम्पादक

प्रो. रमेशकुमार पाण्डेय
कूलपति

सम्पादक

डॉ. अशोक थपलियाल
सहाचार्य एवं अध्यक्ष

वास्तुशास्त्र विभाग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

(मानित विश्वविद्यालय)

नव देहली-110016

प्रकाशक-
 वास्तुशास्त्र विभाग
 श्री लालबाबू रामस्वी राम्पट्टी संस्कृत विद्यापीठ
 (मानित विद्याविद्यालय)
 काशी साहित्यनिक सेत्र, नई दिल्ली-११००१६

ISSN : 0976-4321

६ प्रकाशक

संस्करण - २०१९

मूल्य ₹२०/-

प्रकाशक की लिखित मत्तुनिमति के बिना इस प्रथ के किसी भी अंश का
 अनुवाद या किसी भी रूप से उपयोग करता सवधा वर्जित है।

मुद्रक:
 गणेश प्रिट्टी प्रेस
 दिल्ली-११००१६
 १८११६६३३३१/९३

12. द्वार, गवाक्ष, वरामदा एवं आँगन का विचार (भारतीय वास्तुशास्त्र के परिपेक्ष्य में)	प्रो. हंसधर झा अध्यक्ष- ज्योतिष विभाग राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर	93-109
13. श्रौतवेदी के निर्माण में वास्तुसिद्धान्त	विद्यावाचस्पति डॉ. सुन्दरनारायणझा सहाचार्य, वेदविभाग, श्री लालबाबा रामसंविद्यापीठ, नई दिल्ली-16	110-116
14. वास्तुशास्त्र में भूपरियह विचार	डॉ. रशिम चतुर्वेदी सहाचार्य (ज्योतिष विभाग) श्री लालबाबा रामसंविद्यापीठ, नई दिल्ली-16	117-129
15. लक्ष्मीनारायण मन्दिर दिल्ली का वास्तुशास्त्रीय दृष्टिकोण से अध्ययन	डॉ. देशबन्धु सहायकाचार्य, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री लालबाबा रामसंविद्यापीठ, नई दिल्ली-16	130-145
प्रिया कौशिक		
16. देवालय और उनके शिखर विधान	शोध-छात्र, वास्तुशास्त्रविभाग, श्री लालबाबा रामसंविद्यापीठ, नई दिल्ली-16	146-155
17. शिक्षण विधियों में नवाचार: वास्तुशास्त्र के सन्दर्भ में	डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू' वास्तुशास्त्रविद, विश्वविद्यालय, 40 राजश्री कॉलोनी विनायकनगर, उदयपुर-313001 राजस्थान	156-163
18. प्रासाद निर्माण में शिखर विधान	डॉ. ज्ञानेन्द्र कुमार असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा संकाय दिल्ली विश्वविद्यालय	164-170

वास्तुशास्त्र में भूपरिग्रह विचार

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

दिक् सम्मत भवन की स्थिति और विन्यास का उसमें निवास करने वालों के जीवन पर सीधा और स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। आदि काल से हमारे ऋषि मुनियों ने इन प्रभावों का अध्ययन किया है और सचित अनुभवों को वेद-पुराण आदि शास्त्रों में वर्णित किया है। इस ज्ञान को 'वास्तुशास्त्र' कहा गया है। कहने का तात्पर्य यह है कि वास्तु के नियमानुसार बने भवन में निवास करने से स्वास्थ्य व सम्पदा की वृद्धि, ज्ञान की प्राप्ति, सन्तान सुख की प्राप्ति होती है, जीवन सुखी एवं शान्तिमय बनता है तथा व्यक्ति समस्त ऋणों से मुक्त रहता है। शास्त्रों की सम्मति की उपेक्षा करने से अनावश्यक यात्राओं, अपयश, अनेक दुखों व निरशाओं का सामना करना पड़ता है। "सर्वे भवन्तु सुखिनः" वैदिक उद्घोष का पालन करते हुए समस्त लोक के कल्याण एवं सुख समृद्धि की कामना के साथ सभी ग्राम, नगर एवं भवन वास्तुशास्त्र के नियमानुसार बनाने की परिकल्पना इस शास्त्र का प्रमुख उद्देश्य है। यथा—

सुखं धनानि बुद्धिश्च सन्तति सर्वदानुजाम्।
प्रियान्येषां च संसिद्धं सर्वं स्यात् शुभलक्षणम्॥
यात्रा निन्दित लक्ष्यमत्र तहि तेषां विधातकृत।
अतः सर्वमुपादेयं यद्भवेत् शुभलक्षणम्॥
देशः पुरनिवासश्च समा वेश्मासनानि च।
यद्यदीदृशमन्यच्च तत्तच्छ्रेयस्करं मतम्॥
वास्तुशास्त्राद्वते तस्य न स्याल्लक्षणनिश्चयः।
तस्माल्लोकस्य कृप्या शास्त्रमेतदुदीयते॥॥

भू परिग्रह से तात्पर्य है "भूमि का परिग्रहण अर्थात् उचित भूमि का चयन करना।" किसी भी नगर, ग्राम अथवा भवन के लिए सर्वप्रथम भूमि का चयन किया जाता है। भूमि की उपयुक्तता के लिए सर्वप्रथम भूमि का परीक्षण किया जाता है, इस परीक्षण में इसके कुछ दोष दृष्टिगोचर हो तो इन दोषों को दूर करने के लिए वास्तुशास्त्रोक्त विधि से भूमि का शोधन किया जाता है भूमि के आकार, वर्ण एवं शब्दादि के आधार पर उत्तम प्रकार से विद्वान स्थपति से परीक्षण करवा कर भूमि परिग्रहण का निर्देश वास्तुशास्त्र में दिया गया है। यथा—

1. स.सूत्रधार प्र.अ. रूलोक-2, 3, 4, 5

दृक्सिद्धं निरयणज्य चित्रापशीयमुत्तमम् । “विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्” भूमो विजयतेराम्॥

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

ISSN 2229-3450



राजा-शनि

बिक्रम संवत्- २०७६
शक-संवत्- १९४९



मन्त्री-सूर्य

भारतगणराज्य-संवत् ७२-७३
श्रीवीय-सन् २०१९-२०२०



विद्यापीठ-पञ्चाङ्गः

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब मार्ग अस्थानिक द्वारा, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ३६

संवत्सर - परिधावी

मूल्य रु. ५०/-

प्रधान-सम्पादक

प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति

सम्पादक :



प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग
प्रमुख, वेदवेदाङ्गसंकाय

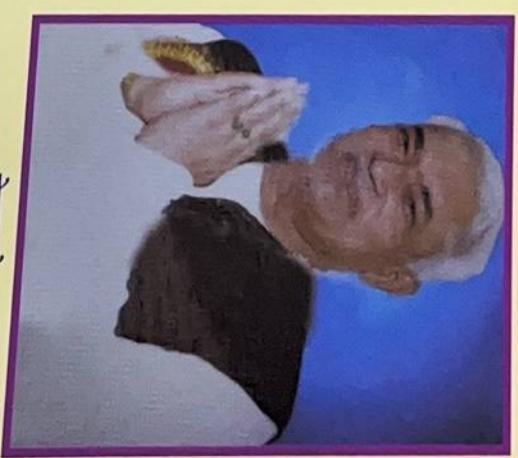
स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
“राष्ट्रपति-सम्मानित”

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा ‘आचार्य एवं ज्योतिषविभागाध्यक्ष’
3. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
5. डॉ. सुशील कुमार ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
7. डॉ. रघिम चतुर्वेदी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
2. प्रो. नीलम ल्होला ‘आचार्या, ज्योतिष-विभाग’
4. प्रो. परमानन्द भारद्वाज ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
6. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’

स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
प्रेरणास्रोत
“राष्ट्रपति-सम्मानित”



श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित-विश्वविद्यालय)
बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११० ०१६

श्री लाल बहादुर शास्त्री

संक्षिप्त-परिचय

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अज्ञात
की पूर्ति के लिए जाना

विद्यापीठ पञ्चाङ्गः

◆ विषय-सूची

◆ विक्रम संवत् २०७५ ◆

विद्यापीठ पञ्चाङ्ग		विषय-मूच्छि		विक्रम मंवत् २०७५	
संक्षिप्त-परिचय	प्रस्तावना	विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय मूच्छि	संबल्परादि फल	नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश मारिणी	चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्षशुल, नक्षत्र-गृह,
प्रस्तावना	विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय मूच्छि	शनि की साक्षेत्राती व दैव्या का फल	लग्नसारिणी अश्वांश	मुहूरदशा, योगिनीपूर्वदशा, विराशिष्पति-चक्र	लान-विचार व यात्रा प्रथान-विचार
संबल्परादि फल	शनि की साक्षेत्राती व दैव्या का फल	मेषादि द्वादश राशियों का यासिक फल	वर्षफल निर्माण-विधि	गहुमैत्री अश्वांश	गहुमैत्री-चक्र
शनि की साक्षेत्राती व दैव्या का फल	मेषादि द्वादश राशियों का यासिक फल	आय-व्याय बोधक चक्र	लग्नसारिणी अश्वांश	दशमलग्नसारिणी	द्वारस्थापन विचार
मेषादि द्वादश राशियों का यासिक फल	आय-व्याय बोधक चक्र	विषय मूहूर्तों का विचार	वर्षफल निर्माण-विधि	गहुमैत्री-चक्र, सिद्धयादियोग-चक्र,	जीर्ण-तून गृह प्रवेश-
आय-व्याय बोधक चक्र	विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	लग्नसारिणी अश्वांश	अन्याक्षादिसंज्ञा, शिववास	मुहूर्त, चुम्भ-चक्र व दूकान (विषया) मुहूर्त
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान	विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मणीनी,
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान	गर्भाधान, पुंसवन-सीमन्त, स्तनपान	पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व	पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा	जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा	जलशयारभस्त्रप्रतिलङ्घ मुहूर्त	जलशयारभस्त्रप्रतिलङ्घ मुहूर्त
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	भूमि पर प्रथमोपवेशन का मुहूर्त-विचार	भूमि पर प्रथमोपवेशन का मुहूर्त-विचार	ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, जपनीय-	ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, जपनीय-
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	अन्याशन, कणिकेश तथा मुण्डन संस्कार	अन्याशन, कणिकेश तथा मुण्डन संस्कार	चुल्लिन्चक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त,	चुल्लिन्चक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्त,
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	का विचार	का विचार	बीजवप्न मुहूर्त, राह नक्षत्र से बीजोदित चक्र,	बीजवप्न मुहूर्त, राह नक्षत्र से बीजोदित चक्र,
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	नासिकाउदेन, अश्वराम्भ, विद्यारम्भमुहूर्ते	नासिकाउदेन, अश्वराम्भ, विद्यारम्भमुहूर्ते	औषधसेवन मुहूर्त, वाहन आरोहण मुहूर्त	औषधसेवन मुहूर्त, वाहन आरोहण मुहूर्त
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	का विचार	का विचार	मन एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र	मन एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	भारत के प्रमुख नगरों के पलभास, अश्वांश,	भारत के प्रमुख नगरों के पलभास, अश्वांश,	भारत के प्रमुख नगरों के पलभास, अश्वांश,	भारत के प्रमुख नगरों के पलभास, अश्वांश,
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१४७	१४७	१४७	१४७
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१४८	१४८	१४८	१४८
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१४९	१४९	१४९	१४९
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५०	१५०	१५०	१५०
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५१	१५१	१५१	१५१
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५२	१५२	१५२	१५२
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५३	१५३	१५३	१५३
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५४	१५४	१५४	१५४
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५५	१५५	१५५	१५५
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५६	१५६	१५६	१५६
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५७	१५७	१५७	१५७
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५८	१५८	१५८	१५८
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१५९	१५९	१५९	१५९
विषय मूहूर्तों का विचार	विषय मूहूर्तों का विचार	१६०	१६०	१६०	१६०

बैद्यत-
विंशोन्नरीदशा सारणी
विंशोन्नरी-दशान्तर्देशा-चक्र

पांडि-नु...
वेवक्रम-संवत् २०७६ का पञ्चाङ्ग
दिं० संवत् २०७६ के दैनिक स्पष्ट
दैनिक लग्न सारिधी

संदिग्ध क्रत-पर्व निर्णय
वि.सं. २०७६ के माझ़लिक पुहूतों का विवरण
वि.सं. २०७६ के विवाहादि मुहूर्त

एवं अमृतभाष्यम् ।
वि.सं. २०७६ दैनिक राहुकाल सारिणी
क्रांति-चर-बेलान्तर-स्पष्टान्तर सारिणी
वि.० संवत् २०७६ के ग्रहण का विवरण
वि.० संवत् २०७६ संवत् २०७८

ग्रहों के वक्त्रत्व-मागत्व एवं उद्धार
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपृष्ठ-रविपृष्ठ-चिपुष्टक
द्विपुष्टक-अमृतसिद्धि, सिद्धयोग
— नामत्वयोग

मध्याद् द्वादश राशयो का धासक फल
विं संबत् २०७६ के बत-पर्व एवं उत्सव
विं संवत् २०७६ के वारीकृत बत-पर्वों
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार विं सं-

विद्यापाठ-पञ्चाङ्ग की विषय मूल
संवत्सरादि फल
शनि की साढ़ेसाती व दैत्या का फल
आय-व्यय बोधक चक्र

प्रस्तावना

विद्यापाठ पं

◆

卷之三

२४८

श्रीविष्णुपत्रसंकल्पपत्र १९८०
श्रीवामनपरशुराम-गमचन्द्रज्ञान...
युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुरामावतारो कलियुगाप्लाण ५३२००५
युगेऽस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारो गतकलिवर्षणि ५१२००५
१९८००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारो भवत्। साप्तं गतकलिवर्षणि ५१२२
वर्षावतारोऽभवत्। १२२ वर्षावर्षेषकाल

विद्यार्थी	१६०	प्राप्ति
विद्यार्थी	०५	प्राप्ति

रवरण, कन्ना-वरण योगी विललशुद्धि	१५०	१३३ अभीष्ट स्थान के सूचोदय तथा १४०
तं का विचार	१५१	की विधि
	१५२-१५४	विभिन्न अंगों पर पत्ती (छिपकली/किरल)
	१५५-१५८	गिरने का फल एवं उपचार, छीक विचार
	१५९	जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में नाट्यमात्रस्यमूर्यादि ग्रहों का फल

विद्यारम्भमुहूर्त	
१४७ भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश, रेखांश एवं देशान्तर	१४७
१५८ लानसाधन के लिए परभा से चारछण्ड तथा स्वदेशीय उदयान बनाने की विधि	१५८
१४९ लघरित्य सारिणी	१४९

निष्क्रमण तथा	१४५-१४६	पशुक्रय, भास्त्र... जलाशयारामसुपतिष्ठा मुहूर्ते ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, जपनीय- चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण मुहूर्ते, बीजवपन मुहूर्त, गाह नक्षत्र से बीजोपि चक्र, ओषधसेवन मुहूर्ते, वाहन आरोहण मुहूर्ते आदि-मध्यमिथा ज्ञानार्थ-चक्र
इन संस्कार	१४३	

१३६-१४१ चीष्टिया मुहूर्त-चक्र
 १४२ चैत्रादि मासानुसार गहराभ्य पल्ल, वत्स-चक्र,
 कुआं खोदने या नल लगाने का मुहूर्त
 द्वारात्मापन विचार, जीण-नृत्न गृह प्रवेश-
 मुहूर्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विषया) मुहूर्त १३५
 व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी,
 गट्ठन निर्माण च

◆ विक्रम संवत् २०७५ ◆	
राशिपति-चक्र	१३४ चन्द्रवास, योगिनीवास, दिवशुल, नशत्र-शूल, लग्न-विचार व याजा प्रस्त्रान-विचार १३५ राहुमुख्यान, गुहारम्भ विचार

चतुर्दशी में यह पर्व मनाते हैं। यदि दोनों दिन चतुर्दशी निशीथव्यापिनी हो तो प्रदोष एवं निशीथ दोनों कालों में चतुर्दशी जिस दिन व्यात हो उसी दिन विष्णुभक्त वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। यथा-

केवलु विष्णुपूजायामियं निशीथव्यापिनी ग्राह्या, दिनद्वये तदव्याप्तौ

निशीथप्रदोषमपव्यापिनी ग्राह्येत्यहुः॥ (धर्मसिद्ध्यः)

द्वितीय परम्परानुसार प्रथम दिन व्रत करके अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी में शिवपूजन करके प्रातःकाल पारणा करने का विधान है। इस परम्परा के अनुयायी अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी जिस अहोरात्र में हो उस दिन उपवास करते हैं और उसी दिन वैकुण्ठ चतुर्दशी मनाते हैं। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदयव्यापिनी हो तो पहले दिन उपवास और दूसरे दिन अरुणोदय में पूजन करना चाहिए। यदि चतुर्दशी दोनों दिन अरुणोदय का समर्थन करे तो चतुर्दशी तिथि वाले दिन अहोरात्र में अरुणोदय के समय पूजन करना चाहिए और पूजन से पहले इसी अहोरात्र में उपवास करना चाहिए। यथा-

पूर्वोद्योगवासं कृत्वा अरुणोदयव्यापिन्यां चतुर्दशां शिवं सम्पूज्य,
प्रातः पारणं कार्यम्। तथा च चतुर्दशीयुक्ताखोदयवति अहोरात्रे
उपवासः फलितः उभयत्राणोदयव्याप्तौ परत्राणुलोदयोद्ये पूजा, पूर्वव्याप्तौ
उपवासः। उभयत्राणोदयव्याप्तौ चतुर्दशीयुक्ताहोरात्रे एव अरुणोदये
पूजा पूर्वोद्योगवासश्च। (धर्मसिद्ध्यः)

इस वर्ष दिनांक १० नवम्बर २०१६ को चतुर्दशी प्रदोष एवं निशीथ व्यापिनी है। अतः विष्णु पूजा एवं व्रत इसी दिन होगा। शिवभक्त भी इसी दिन अरुणोदयव्यापिनी चतुर्दशी के दिन व्रत कर अरुणोदय में शिवपूजा करके ११ नवम्बर, २०१६ ई. को प्रातः पारणा करना शास्त्र सम्मत होगा।

संकष्ट चतुर्दशी व्रत- (१३ जनवरी, २०२० ई. सोमवार)
संकष्ट चतुर्दशी का व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी भाष्म कृष्ण चतुर्दशी वाले दिन मनाने का विधान है। तृतीयमयुता चतुर्दशी शास्त्रानुसार प्रथम भासी गई है। यथा-

चतुर्दशी गणाधस्य मातृविद्धा प्रशस्यते॥

इस निर्णयानुसार इस वर्ष दिनांक १३ जनवरी, २०२० ई. को तृतीयमयुता चतुर्दशी व्यापिनी ग्राह्या हो जाएगी। अतः इस दिन संकष्टचतुर्दशी का व्रत करना श्रेष्ठ होगा।

व्रतस्त चंचमी- (३० जनवरी, २०२० ई. गुरुवार)

माघ शुक्ल पंचमी को व्रतस्तचंचमी कहते हैं। इस दिन विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की पूजा अर्चना विशेष रूप से की जाती है तथा व्रतस्तोत्सव का आरम्भ भी इसी दिन होता है। यथा-

माघशुक्लपंचमी व्रतस्त चंचमी तस्य व्रतस्तोत्सवारम्भः॥ (धर्मसिद्ध्यः)

इस वर्ष ३० जनवरी, २०२० ई. को चंचमी तिथि पूर्वोदयव्यापिनी है तथा औदयिक भी है। अतः इस दिन व्रतस्तचंचमी का पर्व मनाना शास्त्र सम्मत होगा।

महाशिवरात्रि व्रत- (२१ फरवरी, २०२० ई. शुक्रवार)

महाशिवरात्रि का व्रत निशीथव्यापिनी फलनुन कृष्ण चतुर्दशी को करने का विधान है। इस वर्ष यह तिथि दिनांक २१ फरवरी, २०२० को निशीथव्यापिनी है, अतः इस दिन व्रत करना प्रशस्त होगा।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी
(ज्योतिष-विभाग)

विक्रम संवत् २०७६ के माझ्जलिक मुहूर्तों के लिए काल शुद्धि

कालशुद्धि

सामाचरतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, शाद्वप्त्य, भीष्मपञ्चक,

होलिकाष्टक, पौष्टमास व चैत्रमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माझ्जलिक होलिकाष्टक, पौष्टमास व चैत्रमास में भी किया जाना चाहिए। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया जाना चाहिए।

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ शुक्रवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा मांगलवार तदनुसार ८ नवम्बर, २०१९ से १२ नवम्बर, २०१९ तक भीष्मपञ्चक रहेंगे जो

कार्य के लिए चार्जित काल भासा गया है। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया जाना चाहिए।

दृक्सिद्धं निरयणञ्च चित्रापशीयमुत्तम् । “विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्” भूमौ विजयतेराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय



राजा-बुध

विक्रम संवत्- २०७७
शक-संवत्- १९४२



मन्त्री-चन्द्र

भागणराज्य-संवत् ७३-७४
ईश्वरीय-मन् २०२०-२०२१



विद्यापीठ-पञ्चाङ्गः

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विद्यापीठ
(मानित-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब मांस्थानिक द्वे, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ३८

संवत्सर - प्रमादी

मूल्य रु. ५०/-

प्रधान-सम्पादक
प्रो० रमेश कुमार पाण्डे

कुलपति

सम्पादक :

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग
प्रमुख, वेदवेदाङ्गसंकाय

स्व. म.म.प. प्रधान-प्रबन्धक
“राष्ट्रपति-सम्मानित”,
शर्मा



1.

2.

3.

4.

5.

6.

7.

प्रो. विनोद कुमार शर्मा ‘आचार्य एवं ज्योतिषविभागाध्यक्ष’
प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
डॉ. सुशील कुमार ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
डॉ. राजेन्द्र चतुर्वेदी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
डॉ. परमानन्द भारद्वाज ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’

सम्पादक मण्डल

प्रेरणास्रोत

स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी

“राष्ट्रपति-सम्मानित”,

प्रो. नीलम छोला ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
प्रो. परमानन्द भारद्वाज ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’

प्री-४, कुरुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११० ०१६

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ

की पूर्ति के लिए खर्चीय “प्रधानमन्त्री राष्ट्रीय संस्कृत-संस्कृत विद्यापीठ”

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत-संस्कृत विद्यापीठ

भारत की राजधानी दिल्ली में एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्कृत-संस्कृत विद्यापीठ

नव संस्कृत

❖ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ❖

❖ विषय-मूर्ची ❖

❖ क्रिक्रम संवत् २०७७ ❖

सहित-परिचय

प्रसारण

विज्ञापि-पञ्चाङ्ग की विषय मूर्ची

संबंधित फल

शनि की सावेसी व वैद्या का फल

आर-ल्लय वायोक चक्र

भेदादि द्वादश गाँशें का आसिक फल

विं संवत् २०७७ के चत-पंच एवं उत्तर

विं संवत् २०७७ के वर्णाकृत ब्रह्म-पदों की मूर्ची

गहों के गाँश एवं निधनचार विं संवत् २०७७

गहों के वक्रत-गाँश-चार एवं उत्तरास्त्र

स्वर्णसिद्धि-गुणपृथ-रिपुपृथ-रिपुकर

द्विपृष्ठा-अमृतसिद्धि, सिद्धियोग,

अमृतयोग एवं रिवयोग

विं संवत् २०७७ दीनिक गहोंकाल मार्गिणी

क्रांति-चरा-बेलान्तर-स्थानात्म कारिणी

विं संवत् २०७७ के ग्रहण का विवरण

मंदिराय चत-पंच संवत् २०७७

विं संवत् २०७७ के माहात्मक मूर्चों का विवरण

विं संवत् २०७७ के विवाहादि मूर्चे

गह-पूलादि जन्म विचार

विक्रम-संवत् २०७७ का पञ्चाङ्ग

विं संवत् २०७७ के दीनिक स्थान ग्रह

दीनिक जन्म सारिणी

पद्मर्णी-चक्र

विशेषोत्तरादशा सारिणी

विशेषोत्तरादशा-चक्र

श्रीपञ्चलमूर्चये नमः

सूर्य आमा जगतस्तुपरम

मोमसूर्यीनालाकल्पामिन्दुशेखराम

पञ्चविन्दुं होः शनिं पञ्चकृत्यकर्ता तुः॥

पञ्चदेवानांको भूता पञ्चशक्तिसमन्वितः।

पञ्चमिट्टिमध्याय प्रपञ्चरहितोऽवतु ॥

प्रादे नूतनत्वसे प्रतिगते कुर्याद् व्याजारोपणम्

स्नानं मङ्गलमाचरेद्दिवज्वानौ सार्वं सूर्योत्तरात् ।

देवानां गुरुव्योषिताऽव्य विभागजलकारवस्त्रादिः

सम्पूर्णो गणकः फलञ्ज शृण्यान्तमाच्च लभ्यतम्॥

१ नवीन-प्रचान वर्ष-प्रवेश सारिणी	१४२ चन्द्रवास, गोमिनीवास, दिक्षशूल, नक्षत्र-शूल,
२-३ पूहुरदशा, योगीनीपुहुरदशा, विराशिपति-चक्र	तन-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार १६१-१७०
४ वर्षफल निष्पाण-विचित्र	१४३ राहुप्रखज्ञान, विचार विचार, चौथिया मूर्चे-चक्र
५-१३ लानसारिणी अक्षांश	१४४-१४९ चौत्रादि भासमुसर पुहुरध फल, वस्त-चक्र, विविध मूर्चों का विचार
१४-१६ दशमलनसारिणी	१५० व्यापादि विचार, जीर्ण-नूतन गृह-प्रवेश-चक्र, कृष्ण-चक्र व द्वृकान (विपणि) मूर्चे-चक्र, विचार विचार, जीर्णी-नूतन, मूर्चों का विचार
१७ महेशी-चक्र, मिद्यादियोग-चक्र,	१५१ व्यापादि विचार, जीर्ण-नूतन गृह-प्रवेश-चक्र, कृष्ण-चक्र व द्वृकान (विपणि) मूर्चे-चक्र, विचार विचार, जीर्णी-नूतन, मूर्चों का विचार
१८-३७ ग्रहेशी-चक्र, मिद्यादियोग-चक्र,	१५२ ज्योतिर्स्थान विचार, जीर्ण-नूतन गृह-प्रवेश-चक्र, विचार विचार, जीर्णी-नूतन, मूर्चों का विचार
३८-४७ विविध मूर्चों का विचार	१५३ ज्योतिर्स्थान विचार, जीर्ण-नूतन गृह-प्रवेश-चक्र, विचार विचार, जीर्णी-नूतन, मूर्चों का विचार
४८-४९ गर्भाशय-पुस्त्र-सौमन् स्तनपान	१५४ जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा जलपूजन जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा अन्नप्राण द्रव्यों विचार
५०-५१ का मूर्चे	१५५ भूमि पर प्रथमोत्तरेशन के मूर्चे-चक्र-विचार १५२-१५४
५२-६१ का विचार	१५६ अन्नप्राण द्रव्यों विचार तथा मृद्गन संक्षार
६२-६५ नासिकार्धेन, अक्षरारम्भ, विद्यारम्भमूर्चे	१५७ जलशयारपुरप्रतिलिपा मूर्चे
६६-६९ का विचार	१५८ ज्योतीर्षी-चक्र, विवाह-संस्कार का विचार
७०-७१ उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार	१५९ ग्रहेशी-चक्र, विवाह-संस्कार का विचार
७२-७६ वर-कर्या का जन्मप्रियका मेलप्रक, दृष्ट्यकृत-	१६० विवाह-संस्कार के लिए पलभा से चरखण्ड तथा रेखांश एवं देशान्तर
७७ ग्राहकृत-ग्रहकृत का परिहर	१६१ भात के प्रमुख नारों के लक्ष्या, अक्षांश, रेखांश स्त्रेशोर्य उदयान बनाने की विधि
७८-८१ काजी-ग्रामदेष का पारहार, वरवरण, कर्या-वरण	१६२ नलित्य सारिणी
९० का मूर्चे एवं विवाह-पुहुनोंयोगो विवलयुक्ति	१६३ अमीट स्थान के सूर्योदय तथा इट्काल बनाने की विधि
९१-९५ वरपृष्ठेश तथा द्विग्रामन-मूर्चों का विचार	१६४ ग्रहेशी-चक्र
९१७-१३० मेलप्रक-सारिणी	१६५ ज्योतिर्स्थान विचार, ग्रहेशी-चक्र
९१९-१३७ मालादेष-विचार, मालादेष-परिहर	१६६ ग्रहेशी-चक्र, विवाह-संस्कार का विचार
९३२-९३९ विवाहादि कार्यों में मूर्चे, चन्द्र व गुण	१६७ ज्योतिर्स्थान विचार, ग्रहेशी-चक्र
९४० का अद्यक-वर्ग, यात्रा मूर्चे विचार	१६८ द्वादशमासमूर्चयादि ग्रहों का फल

श्रीविष्णुपृथक्यकच्छपवरहर्गुर्जिंतवताराः। त्रेतायुगमाणं १२९६००००

५६४००० अस्मिन् युगे कृष्णावलयमावतारोऽकालियुगमाणं ४३२०००

तन्मध्येत्तिसर्वतो श्री चुद्भाजतारोत्तरवत् साम्यतं गतकालवर्णाणि ५१२१

शोयवर्णाणि ४२६८७९ । कृतित्यात्म ८२२ वर्णावशेषकाले

कल्यवतारः स्यात्।

०५

तत्र पापं ० पुण्यं २०। तैशार्यजुल्यतीत्यां चन्द्रे गोहीणीनक्षेत्रे द्वितीयाहे शोभनयोगे व्रेतायुगोत्तिः। तत्र पापं ५ पुण्यं १५। माषकृष्णामावस्थायां शुक्रे तृतीयाहे धृतिलानक्षेत्रे वरीयायोगे द्वापोत्तिः। तत्र पापं १० पुण्यं

सम्पूर्णो गणकः फलञ्ज शृण्यान्तमाच्च लभ्यतम्॥

अधिकमास मास में त्याज्य कर्म- आचार्य गों के अनुसार अधिक मास में अनन्यापान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दान, वतीति, वैदेवत, शुभोत्सर्ग, चूड़ाकर्म, चतुर्बन्ध, देवीतीर्थों में यात्रा, विवाह, अधिष्ठेक, यान और पर के काम अर्थात् गृहराज्यादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए। यथा-

अन्नार्थों प्रतिष्ठां च यज्ञो दानव्रतानि च।

वैदेवतवृषोत्सर्गचूड़करण मेखला:¹¹

गमनं देवीर्थानां विवाहमधिष्ठेचनम्।

यानं च गृहकर्माणि मलमासे विवर्जयेत्।

अधिकमास में करणीय कर्म -

मनुसृति के अनुसार अधिकमास में तीर्थशाल्ड, दर्शशाल्ड, प्रतशाल्ड, सापिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान करना चाहिए।

यथा-

तीर्थशाल्डं दर्शशाल्डं प्रतशाल्डं सिपण्डनम्।

चन्द्रसूर्यग्रहे स्नानं मलमासे विशेषतो॥ (मनुसृति)

गर्भाधानादि संस्कार में, बालक के अन्नप्राशन समय में, गुरु-शुक्र अस्त्रल और मलमास जनित दोष नहीं होता है। क्योंकि इसमें काल की प्रधानता होने से उक्त कार्य मलमास में किए जा सकते हैं। यथा-

गर्भाधानादि संस्कारे तथालाप्राशने शिशोः।

न तत्र गुरुशुक्रास्तमासादिद्वृषणम्॥ (मुहूर्त गणपति)

अधिक मास में फल प्राप्ति की कामना से किए जाने वाले कार्य चार्जित हैं। फल की आशा से मुक्त होकर सभी कार्य किए जा सकते हैं।

शास्त्रों में अधिकमास को बड़ा पवित्र माना गया है। भावान विष्णु¹⁶ की उपासना इस मास में विशेष रूप से करने के कारण इस मास को 'पुरुषोत्तम' मास भी कहते हैं। इस मास में स्नान, दान, वत करने का फल अद्यय बतलाया गया। अतः इस मास में यथाशक्ति दान-पूर्ण अवश्य करना चाहिए। जिस प्रकार छोटा सा बीज बोने से बट जैसा दीर्घ विशाल वृक्ष उत्पन्न होता है, ऐसे ही अधिक मास में दिया हुआ दान अन्न फल देने वाला होता है। शास्त्रों का कथन है कि पुरुषोत्तम मास में सूर्योदय परम प्रसन्न होते हैं और करने वाले को इस लोक में सभी मुख्य तथा अन्त में दोष की प्राप्ति होती है।

आश्विन अधिक मास का फल-

दूसरों के शासन एवं चोरों से जनता दुखी रहती है। उत्तर भारत में गुर्भिष्ठ, कल्याण त्रेता शासन तत्र की सजगता रहेगी, रोगों की संभवत भी कम रहेगी। किन्तु दक्षिण भारत में गुर्भिष्ठ, राजाओं का नाश तथा ब्राह्मणों की गुद्ध होती है। यथा-

आश्विने परचकेण तस्करैः पीडिताः प्रजाः।

गुर्भिष्ठं शेममारोयं गुर्भिष्ठं दक्षिणापयोः।

राजानस्त्रं नशयन्ति गुर्भिष्ठब्राह्मणातिषु।

डॉ. रघु चतुर्वेदी
(चतुर्वेद-विभाग)

विक्रम संवत् २०७७ के माझ्ज्ञालिक मुहूर्तों के लिए काल-शुद्धि

कालशुद्धि

सामाचरतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, शाङ्कपञ्च, भीष्मपञ्चक, होलिकाटक, पौष्मास च चैत्रमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माझ्ज्ञालिक कार्य के लिए चार्जित काल मास गया है। उपनयन संस्कार चैत्रमास में भी किया जाता है तथा पुरातन गृहप्रबोध गुरु-शुक्र के अस्तकाल में भी किया है। इस वर्ष विष्णु सं० २०७७ के माझ्ज्ञालिक मुहूर्तों के सदर्श में कालशुद्धि का विवरण निम्न है।

१. गुरु अस्त

५. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्रवार १९ शुक्रवार से कार्तिक शुक्रवार पूर्णिमा बुधवार तदनुसार २५ नवम्बर २०२० से ३० नवम्बर २०२० तक भीष्मपञ्चक होंगे जो माझ्ज्ञालिक कार्यों में त्याज्य हैं।

६. पौष सौर-मास

विष्णु सं० २०७७ में १५ दिसंबर २०२० से १३ जनवरी २०२१ तक (पार्वतीषुक्त १ भौमवार में पौष कृष्ण अमावस्या बुधवार तक) मार पौष मास का समय विवाहादि संस्कारों में चार्जित है।

दृक्सिद्धं निरयणज्य चित्रापश्मीयमुन्तमप् । “विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्” भूमौ विजयतेराम्॥

दृक्सिद्ध निरयण भारतीय

ISSN 2229-3450



राजा-मंगल

विक्रम संवत्-२०७८
शक-संवत्-१९४३



मन्त्री-मंगल

भा०गणराज्य-संवत् ७४-७५
ईश्वरीय-सन् २०२१-२०२२



विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री याष्टीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब मार्गानिक शेष, नई दिल्ली - ११००१६

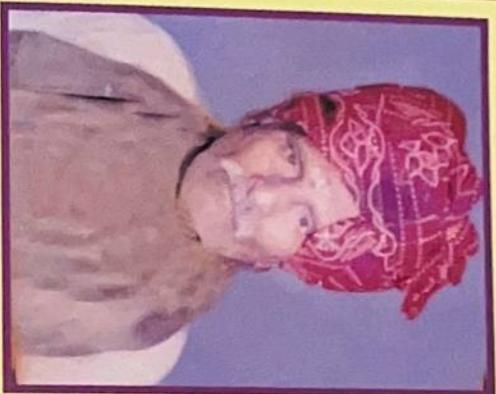
वर्ष : ३९

संवत्सर - राक्षस

मूल्य रु. ५०/-

प्रधान-सम्पादक

प्रो० रमेश कुमार पाण्डेय
कुलपति



सम्पादक :

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग
प्रमुख, वेदवेदाङ्ग-संकाय

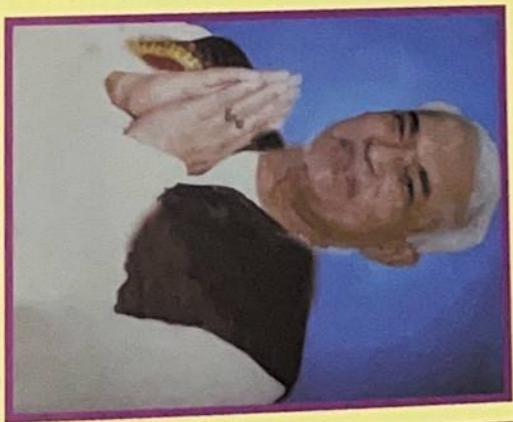
प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

पञ्चाङ्ग-प्रवर्तक

स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
“राष्ट्रपति-सम्मानित”

सम्पादक मण्डल

प्रेरणास्रोत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
“राष्ट्रपति-सम्मानित”



1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा ‘आचार्य एवं ज्योतिषविभागाध्यक्ष’
2. प्रो. नीलम ठ्योला ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
3. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
4. प्रो. परमानन्द भारद्वाज ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
5. डॉ. सुशील कुमार ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
6. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
7. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११० ०१६

◆ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◆	◆ विषय-सूची ◆	◆ विक्रम संवत् २०७८ ◆
संक्षिप्त-परिचय	१	चन्द्रवास, योगिनीवास, दिक्शूल, नक्षत्र-शूल,
प्रस्तावना	२-३	लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार १६१-१६२
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची	४	राहुपुखज्ञान, गृहारम्भ विचार,
संवत्सरादि फल	५-१२	चौघड़िया मुहूर्त-चक्र १६२-१६३
शनि की सादेसाती व दैव्या का फल	१२-१४	चैत्रादि मासानुसार गृहारम्भ फल, वत्स-चक्र,
आय-व्यय बोधक चक्र	१५	कुआं खोदने या नल लमाने का मुहूर्त १६४
मेषादि द्वादश राशियों का मासिक फल	१६-२२	द्वारस्थापन विचार, जीर्ण-नूतन गृह प्रवेश-
विं. संवत् २०७८ के ऋत-पर्व एवं उत्सव	२३-४१	मुहूर्त, कुष्ठ-चक्र व दूकान (विपणि) मुहूर्त १६५
विं. सं. २०७८ के वर्गीकृत व्रत-पर्वों की सूची	४२-४३	व्यापार ग्राहारम्भ, नौकरी, मुकदमा, मशीनरी,
ग्रहों के राशि एवं नक्षत्रचार वि. सं. २०७८	४४-४५	पशुक्रय, मन्दिर निर्माण व जलाशयारामसुरप्रतिष्ठा
ग्रहों के वक्रत्व-मार्गात्व एवं उदयास्त	४६	मुहूर्त, जपनीय-चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण
सर्वार्थसिद्धि-गुरुपृथ्य-रविपृथ्य-त्रिपुष्कर		मुहूर्त, बीजवपन मुहूर्त, राहु नक्षत्र से बीजोपि चक्र,
द्विपुष्कर-अमृतसिद्धि, सिद्धियोग,		ग्रहों के दान समय, जपसंख्या, औषधसेवन मुहूर्त,
अमृतयोग एवं रवियोग	४७-५३	वाहन आरोहण मुहूर्त १६६-१६७
वि.सं. २०७८ दैनिक राहुकाल सारिणी	५४-५७	मन्त्र एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र १६८
क्रांति-चर-वेलानन्तर-स्पष्टानन्तर सारिणी	५८-६१	भारत के प्रमुख नगरों के पलभा, अक्षांश,
विं. संवत् २०७८ के ग्रहण का विवरण	६२-६५	रेखांश एवं देशानन्तर १६९-१७०
संदिग्ध व्रत-पर्व निर्णय विं. संवत् २०७८	६६-६८	लग्नसाधन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा
वि.सं. २०७८ के माझलिक मुहूर्तों का विवरण	६९	स्वदेशीय उदयमान बनाने की विधि १७०
वि.सं. २०७८ के विवाहादि मुहूर्त	७०-८३	लघुरित्य सारिणी १७१-१७२
गण्ड-मूलादि जन्म विचार	८४	अभीष्ट स्थान के सूर्योदय तथा इष्टकाल बनाने
विक्रम-संवत् २०७८ का पञ्चाङ्ग	८५-१०८	की विधि १७३-१७४
विं. संवत् २०७८ के दैनिक स्पष्ट ग्रह	१०९-१२२	विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किरल)
दैनिक लग्न सारिणी	१२३-१२९	गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार १७५
षट्कर्णी-चक्र	१३०-१३१	जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में
विंशोत्तरीदशा सारिणी	१३२	द्वादशभावस्थसूर्यादि ग्रहों का फल १७६

श्रीमङ्गलमूर्तये नमः

श्रीवाग्देवतायै नमः

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुष्ट्य

सोमसूर्यानिलाकल्पामकल्पमिन्दुशेखराम्।

पञ्चबिन्दुं हरे: शक्तिं पञ्चकृत्यकर्तीं नुमः॥

पञ्चदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः।

पञ्चसृष्टिमधिष्ठाय प्रपञ्चरहितोऽवतु ॥

प्राप्ते नतनवत्सरे प्रतिग्रहे कर्यात् धन्तागोपात्

श्रीविष्णुमत्स्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवताराः। त्रेतायुगप्रमाणं १२९६०००

युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामचन्द्राऽवताराः। द्वापरयुगप्रमाणं

८६४००० अस्मिन् युगे कृष्णबलरामावतारौ। कलियुगप्रमाणं ४३२०००

तन्मध्येऽहिंसाव्रती श्री बुद्धाऽवतारोऽभवत्। साम्प्रतं गतकलिवर्षाणि

५१२० भोग्यवर्षाणि ४२६८८०। कलियुगस्य ८२१ वर्षावशेषकाले

कल्क्यवतारः स्यात्।

कार्तिकशुक्लनवम्यां प्रथमप्रहरे श्रवणनक्षत्रे वृद्धियोगे

कृतयुगोत्पत्तिः। तत्र पापं ० पुण्यं २०। वैशाखशुक्लतृतीयायां चन्द्रे

✓ आश्विन पूर्णिमास्यां कोजागरव्रतम् ।

सा पूर्वत्रैव निशीथव्याप्तौ पूर्वा ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक १९ अक्टूबर २०२१ ई मंगलवार को पूर्णिमा तिथि निशीथकालव्यापिनी है, अतः इस दिन कोजागरव्रत करना शास्त्रोचित होगा।

अहोई अष्टमी व्रत -

कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी को सन्तान की दीर्घायु एवं मगल कामना के लिए अहोई माता का व्रत किया जात है। यह व्रत चन्द्रोदयव्यापिनी अष्टमी तिथि में करने का विधान है-

सा चन्द्रोदयव्यापिनी ग्राह्या॥

उक्त वर्चनानुसार इस वर्ष दिनांक ७ नवम्बर २०२१ शुक्रवार को अष्टमी तिथि चन्द्रोदयव्यापिनी है, अतः इस दिन अहोई माता का व्रत करना प्रशस्त होगा।

होलिकादहन (दिनांक १७ मार्च २०२२ गुरुवार)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्युन पूर्णिमा तिथि को होलिकादहन करने का विधान है। यथा-

सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहिता ग्राह्या ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक १७ मार्च २०२२ ई. गुरुवार को पूर्णिमा तिथि प्रदोषव्यापिनी है, किन्तु इस दिन प्रदोषकाल में भद्रा व्याप्त है, तथा निशीथकाल के बाद जाकर समाप्त हो रही है। ऐसे समय में भद्रा के मुखपुच्छ का विचार कर होलिकादहन करना चाहिए। ऐसा शास्त्रीय नियम है। यथा-

परदिने प्रदोषस्पर्शभावे पूर्वदिने यदि निशीथात्प्राक्

भद्रासमाप्तिस्तदा भद्रावसानोत्तरमेव होलिकादीपनम्॥

निशीथोत्तरं भद्रासमाप्तौ भद्रामुखं त्यक्त्वा भद्रायामेव ॥

(धर्मसिन्धु)

अतः शास्त्रक्वचनानुसार भद्रामुखपुच्छविचारोपरान्त दिनांक १७ मार्च २०२२ ई. गुरुवार को भद्रापुच्छभाग में भारतीय समयानुसार २२ घं. १५ मि. से २३ घं. २७ मि. तक होलिका दहन करना शास्त्रसम्मत होगा।

डॉ. रश्मि चतुर्वेदी

(ज्योतिष-विभाग)

विक्रम संवत् २०७८ के माझलिक मुहूर्तों के लिए काल-शुद्धि

कालशुद्धि

सामान्यतया गुरु एवं शुक्र के अस्तकाल, श्राद्धपक्ष, भीष्मपञ्चक, होलिकाष्टक, पौषमास व चैत्रमास तथा अधिकमास में विवाहादि संस्कारों एवं अन्य माझलिक कार्य के लिए वर्जित काल माना गया है। उपनयन

२०२१ से ०६ अक्टूबर, २०२१ तक रहेगा। इस कालावधि में माझलिक कार्य वर्जित हैं।

४. भीष्मपञ्चक

इस वर्ष कार्तिक शुक्ल ११ रविवार से कार्तिक शुक्ल पूर्णिमा शुक्रवार

१२ नवम्बर २०२१ में ११ नवम्बर २०२१ तक भीष्मपञ्चक रहेंगे

दृक्षिदं निरयणञ्च चित्रापशीयमुत्तमम् । “विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्” भूमो विजयतेराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्षिद निरयण भारतीय



राजा-शनि

विक्रम संवत्-२०७९
शक-संवत्-१९४४



मन्त्री-गुरु

भाग्यगणराज्य-संवत् ७५-७६
ईश्वरीय-सन् २०२२-२०२३



विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

ली-४, कुतुब मार्ग अधिकारी भवन, नई दिल्ली - ११००१६,

वर्ष : ४०

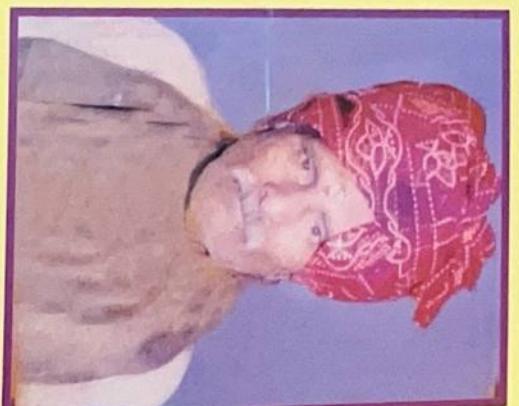
संवत्सर - नाल

मूल्य रु. ५०/-



प्रधान-सम्पादक
प्रो. मुरलीमनोहर पाठ्क
कुलपति

प्रो. प्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

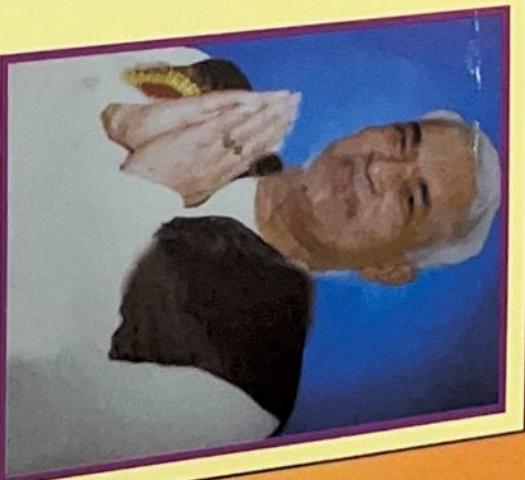


प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

सम्पादक मण्डल

स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
“राष्ट्रपति-सम्मानित”

प्रेरणांग्रेत
स्व. प्रो. शुकदेव चतुर्वेदी
“राष्ट्रपति-सम्मानित”



1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा ‘आचार्य एवं ज्योतिष विभाग’
2. प्रो. नीलम ठोला ‘आचार्य एवं अध्यक्ष ज्योतिष विभाग’
3. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
4. प्रो. परमानन्द भारद्वाज ‘आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
5. डॉ. सुशील कुमार ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
6. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’
7. डॉ. रशिम चतुर्वेदी ‘सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग’

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-4, कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110 016

◆ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◆

◆ विषय-सूची ◆

◆ विक्रम संवत् २०७९ ◆

<p>संक्षिप्त-परिचय</p> <p>प्रसारण</p> <p>विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची</p> <p>संबलादि फल</p> <p>शनि की साहेसाती व हैम्या का फल</p> <p>आद्य-व्यय बोधक चक्र</p> <p>भेषादि द्विदश राशियों का मासिक फल</p> <p>हिं संवत् २०७९ के ज्ञात-पर्व एवं उत्तरवि. सं. २०७९ के गांश एवं नक्षत्रघात वि. सं.-२०७९</p> <p>गहों के चक्रत-पार्श्व एवं उत्तरास्त</p> <p>सर्वोर्ध्मसिद्धि-गुरुपृथ्व-रविपृथ्व-विपुक्त</p> <p>अमृतयोग एवं राशियोग</p> <p>वि. सं. २०७९ दीनिक राहुकाल नारिणी</p> <p>ज्ञाती-च-वेलानार-म्याट्टानार सारिणी</p> <p>हिं संवत् २०७९ के ग्रहण का विवरण</p> <p>सातवर्ष वर्ष-विषय वि. सं. २०७९ के मान्दलिल मुहूर्तों का विवरण</p> <p>वि. सं. २०७९ के विवाहादि मुहूर्त</p> <p>गाड़-मूलादि ज्या विचार</p> <p>विक्रम-संवत् २०७९ का पञ्चाङ्ग</p> <p>हिं संवत् २०७९ के दीनिक स्थान ग्रह</p> <p>दीनिक लग्न सारिणी</p> <p>षड्वर्ष-चक्र</p> <p>विशेषतरीदशा सारिणी</p>	<p>विशेषतरी-दशानदेश-चक्र</p> <p>नवीन-प्राचीन वर्ष-प्रवेश सारिणी</p> <p>पुहादशा, योगिनिमुहादशा, त्रिराशिपति-चक्र</p> <p>वर्षफल निर्माण-विधि</p> <p>लग्नसारिणी अश्वांश</p> <p>दशमलनसारिणी</p> <p>ग्रहमी-चक्र, सिद्धादियोग-चक्र,</p> <p>अन्याशास्त्रिसंज्ञा, विवरास विविध पुहूतों का विचार</p> <p>गम्भिरान, पुंसवन-सोपन, स्तनपन का मुहूर्त</p> <p>जलपृजन जातकर्म-नामकरण, निकमण तथा शुष्मि पर प्रथमात्मेशन के मुहूर्त, राहु नक्षत्र से बीजोत्त चक्र, गहों के दान समय, जपसंख्या, औपायसेवन मुहूर्त, वाहन अतोहण मुहूर्त</p> <p>नासिकाछेदन, अक्षरात्म्य, विद्यारम्भमुहूर्ते</p> <p>५५-५८ का विचार</p> <p>५९-६२ उपनहन, विवाह-संस्कार का विचार</p> <p>६३-६५ वर-कर्णा का जन्मपत्रका भेलापक, दुष्टभक्त,</p> <p>६६-६७ गणकट, गहन्त का पारिहार</p> <p>६८ नादी-पाणीदोष का परीहार, वरवरण, कर्या-वरण</p> <p>६९-८१ का मुहूर्त एवं विवाह मुहूर्तोंप्रयोगी विवलगुद्धि १४८</p> <p>८२ वर्षप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त का विचार</p> <p>८३-१०६ जन्मास्त-चक्र</p> <p>१०७-१२० मेलापक-सारिणी</p> <p>१२१-१२७ मार्गलिंग-विचार, मार्गलिंग-परीहार</p> <p>१२८-१२९ विवाहादि कार्यों में सूर्य, चंद्र व गुरु</p> <p>१३० का अष्टक-वर्ग, यात्रा मुहूर्त विचार</p>	<p>१३१ चन्द्रवास, योगीनीवास, विवर्युल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार</p> <p>१३२ गहुमुखज्ञात, गुहारम्भ विचार</p> <p>१३३ चौथाइया मुहूर्त-चक्र</p> <p>१३४-१३९ चौत्राति-मासनुसार गुहारम्भ फल, वर्ष-चक्र, कुआं खोदने या नल लाने का मुहूर्त</p> <p>१४० द्वारस्थान प्रत्याप्त विचार, जीण-तूत गुह प्रवेश-</p> <p>१४१ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१४२ मुहूर्त, जपनीय-चुल्लचक्र विचार, हल प्रवेश-प्रवहण</p> <p>१४३ मुहूर्त, बोजवन मुहूर्त, गहु नक्षत्र से बीजोत्त चक्र, गहों के दान समय, जपसंख्या, औपायसेवन मुहूर्त, वाहन अतोहण मुहूर्त</p> <p>१४४ गन्ध एवं हवन-समिधा ज्ञानार्थ-चक्र</p> <p>१४५ भात के प्रमुख नारों के पलभा, अक्षरां, स्वदेशीय उत्तराधान बनाने की विधि</p> <p>१४६ लघुरुत्त्य सारिणी</p> <p>१४७-१४८ अधोट स्थान के सुखोदय तथा इट्टकाल बनाने की विधि</p> <p>१४९ लग्नसारण के लिए पलभा से चरणवृण्ड तथा रेखांश एवं देशान्तर</p> <p>१५०-१५२ जन्मास्त्र-चक्र</p> <p>१५३-१५६ मेलापक-सारिणी</p> <p>१५७ विभिन्न अंगों पर पल्ली (छिपकली/किल)</p> <p>१५८ गिनने का फल एवं उपचार, छोंक विचार</p> <p>१५९ जन्मकुण्डली एवं वर्ष कुण्डली में द्वादशभावस्थमूर्ति गहों का फल</p> <p>१६० कार्तिकशुक्लनवम्या बुधवासे मध्याहे श्रवणनक्षत्रे शुतियोंगे</p>
<p>श्रीमङ्गलपते नामः</p> <p>श्रीवाग्वेवताये नामः</p> <p>मूर्य आत्मा जगतस्तस्युष्पश्च</p> <p>सोमसूर्यान्निताकल्पामिन्दुशेष्वराम्।</p> <p>पञ्चविन्दु हेरे: शक्तिं पञ्चकृत्यकार्ती नुमः॥</p> <p>पञ्चवदेवात्मको भूत्वा पञ्चशक्तिसमाचितः॥</p>	<p>श्रीविष्णुमत्यकच्छपवराहनृसिंहाऽवताराः। त्रैतायुगप्रमाणं १२९६०००</p> <p>युगेऽस्मिन् श्रीवामनपरशुराम-रामेष्वद्वात्मको</p> <p>तन्मय्येऽहंसावती श्री बुद्धाऽवतारोऽभवत्। साम्यतं गतकलिवर्णांग</p> <p>५१२२ धोयवर्णाणि ४२६८७७ । कोलियुगम् ८२१ वर्षावशेषकाले</p> <p>कल्पवतारः स्तात्।</p>	<p>१३१ चन्द्रवास, योगीनीवास, विवर्युल, नक्षत्र-शूल, लग्न-विचार व यात्रा प्रस्थान-विचार</p> <p>१३२ गहुमुखज्ञात, गुहारम्भ विचार</p> <p>१३३ चौथाइया मुहूर्त-चक्र</p> <p>१३४-१३९ चौत्राति-मासनुसार गुहारम्भ फल, वर्ष-चक्र, कुआं खोदने या नल लाने का मुहूर्त</p> <p>१४० कुआं खोदने या नल लाने का मुहूर्त</p> <p>१४१ द्वारस्थान प्रत्याप्त विचार, जीण-तूत गुह प्रवेश-</p> <p>१४२ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१४३ मुहूर्त, जपनीय-चुल्लचक्र विचार, हल प्रवेश-प्रवहण</p> <p>१४४ कुआं खोदने या नल लाने का मुहूर्त</p> <p>१४५ द्वारस्थान प्रत्याप्त विचार, जीण-तूत गुह प्रवेश-</p> <p>१४६ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१४७-१४८ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१४९ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१५०-१५२ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१५३-१५६ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१५७ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p> <p>१५८ गुहार प्रारम्भ, नीकोति, मुक्तदमा, यागिनी, पशुक्रय, माद्दर निषाण व जलशयात्मप्रतिष्ठा</p>

५

कार्तिकशुक्लनवम्या बुधवासे मध्याहे श्रवणनक्षत्रे शुतियोंगे

आश्वन कृष्ण प्रतिपदा का श्राद्ध (दिनांक १० सितम्बर २०२२ ई., शनिवार) शास्त्रों में श्राद्ध के निमित्त अपराह्नव्यापिनी तिथि प्रशस्त मानी गई है। यथा-

“पार्वणे त्वपराह्नव्यापिनी ग्राहा” ॥ (धर्मसिन्धु)

इस वर्ष दिनांक ११ सितम्बर २०२२ ई. को प्रतिपदा तिथि १३ घं. १५ मि. तक व्याप्त है, तदुपरात् द्वितीया तिथि १३ घं. १५ मि. पर प्रारम्भ होकर अग्रिम दिन १२ सितम्बर २०२२ को ११ घं. ३६ मि. पर समाप्त हो रही है। क्योंकि दिनांक ११ सितम्बर २०२२ को प्रतिपदा एवं द्वितीया तिथि अपराह्नव्यापिनी है, अतः इस दिन १३ घं. १५ मि. से पूर्व प्रतिपदा का श्राद्ध एवं उसके उपरात द्वितीया का पार्वण श्राद्ध करना शास्त्र सम्मत होगा।

आश्वनकृष्ण अष्टमी का श्राद्ध (दिनांक १८ सितम्बर २०२२ ई., रविवार)

इस वर्ष आश्वन कृष्ण अष्टमी तिथि १७ एवं १८ सितम्बर २०२२ ई. को दोनों दिन अपराह्नव्यापिनी है। दिनांक १७ सितम्बर २०२२ ई. को १३ घं.-२९ मि. से प्रारम्भ होकर १५ घं.-५६ मि. तक अपराह्न को व्याप्त होगी। जबकि १८ सितम्बर २०२२ ई. को अष्टमी तिथि पूर्ण अपराह्नव्यापिनी हो अतः इस दिन अष्टमी का पार्वणश्राद्ध करना शास्त्रोचित होगा।

विशेष - श्राद्धनियमजुसार १७ सितम्बर को कोई भी तिथि (सप्तमी अथवा अष्टमी) अपराह्नव्यापिनी नहीं है अतः इस दिन कोई भी श्राद्ध नहीं होगा।

विजयदशमी (दिनांक ०५ अक्टूबर २०२२ बुधवार)

विजयदशमी का पर्व अपराह्नव्यापिनी आश्वन शुक्ल दशमी के तित माना या जाता है। दशमी के साथ श्रवण नक्षत्र का योग विजयदशमी के

निर्णय में विशेष विचारणीय है। इस वर्ष दशमी तिथि दिनांक ०४ अक्टूबर २०२२ को अपराह्नव्यापिनी है। और दिनांक ०५ अक्टूबर २०२२ को दशमी अपराह्न से पहले १२ घं.-००मि. पर समाप्त हो रही है अर्थात् दशमी तिथि इस दिन अपराह्नव्यापिनी नहीं है। यहाँ श्रवण नक्षत्र ही अपराह्न में विद्यमान है। ऐसी स्थिति में धर्मसिन्धु के अनुसार- यदि दशमी तिथि पहले दिन अपराह्नव्यापिनी हो तथा दूसरे दिन वह कम से कम विमुहूर्तव्यापिनी हो तो दूसरे दिन अपराह्न में श्रवण नक्षत्र हो तो विजयदशमी दूसरे दिन होगा। यथा-

यदा तु पूर्विने एवं अपराह्नव्यापिनी दशमी परदिने च

मुहूर्त्रेत्रविद्यापिनी दशमी परमेव समाप्ता,

परत्रैव च श्रवणयोगवती तदा परेव।

अपराह्ने दशम्यभावेऽपि ॥ (धर्मसिन्धु)

अतः इस वर्ष ०५ अक्टूबर २०२२ ई. को विजयदशमी का पर्व मना ना शास्त्रोचित होगा।

होलिकादहन (दिनांक ०७ मार्च २०२३ सोमवार)

भद्रारहित प्रदोषकालव्यापिनी फाल्जुन पूर्णिमा में होलिकादहन किया जाता है। यथा-

“सा प्रदोषव्यापिनी भद्रारहिता ग्राहा” ॥

इस वर्ष फाल्जुन पूर्णिमा ०६ मार्च २०२३ को १६ घं.-१८ मि. के बाद आरम्भ होकर ०७ मार्च २०२३ को १८ घं.-१० मि. तक व्याप्त है। पहले दिन ०६ मार्च २०२३ को १६ घं.-१८ मि. से २९ घं.-१६ मि. तक भद्रा व्याप्त है अतः इस दिन पूरा प्रदोषकाल भद्रा से दूषित है। अग्रिम दिन ०७ मार्च २०२३ ई. को पूर्णिमा प्रदोष व्यापिनी है तथा भद्रा का अभाव है। अतः ०७ मार्च २०२३ ई. को होलिकादहन करना प्रशस्त होगा।

डॉ. राश्मि चतुर्वेदी
(ज्योतिष-विभाग)

दृक्‌सिद्धं निरयणञ्च चित्रापक्षीयमुत्तम् । “विद्यापीठस्य पञ्चाङ्गम्” भूमि विजयतेराम्॥

ISSN 2229-3450

दृक्‌सिद्ध निरयण भारतीय



राजा-बुध

विक्रम संवत्-२०८०
शक-संवत्-१९५५



मन्त्री-शुक्र

भाग्यगणराज्य-संवत् ७६-७७
ईश्वरीय-सन् २०२३-२०२४



विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय
(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

ली-४, कुतुब मास्थानिक द्वीप, नई दिल्ली - ११००१६

वर्ष : ४९

संवत्सर - पिङ्गल

मूल्य रु. ५०/-

प्रधान-सम्पादक

प्रो. मुरलीमनोहर पाल्क

कुलपति

सम्पादक :

प्रो. ग्रेमकुमार शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रो. बिहारीलाल शर्मा
आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रो. नीलम घोला
आचार्य, एवं ज्योतिषविभागाच्यक्षा

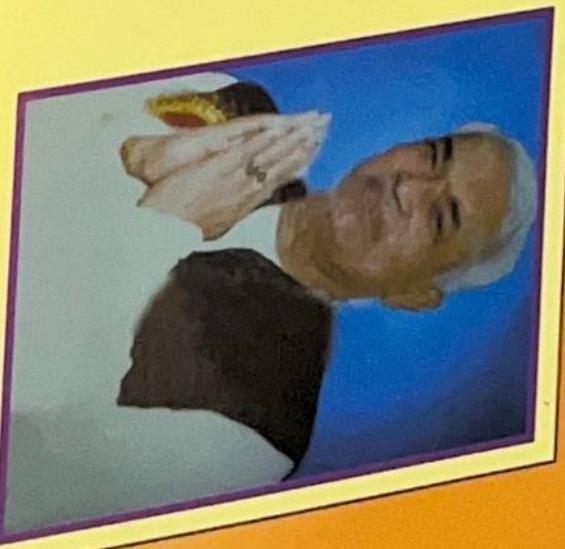


स्व. म.म.पं. कल्याणदत्त शर्मा
“राष्ट्रपति-सम्मानित”

सम्पादक मण्डल

1. प्रो. विनोद कुमार शर्मा आचार्य, ज्योतिष-विभाग
2. प्रो. दिवाकर दत्त शर्मा आचार्य, ज्योतिष-विभाग
3. प्रो. परमानन्द भारद्वाज आचार्य, ज्योतिष-विभाग
4. डॉ. सुशील कुमार सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग
5. डॉ. फणीन्द्र कुमार चौधरी सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग
6. डॉ. रश्मि चतुर्वेदी सह आचार्य, ज्योतिष-विभाग

प्रेरणास्रोत
“राष्ट्रपति-सम्मानित”



श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय-विश्वविद्यालय)

बी-४, कुरुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली-११० ०१६

♦ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग

♦ विक्रम संवत्

◆ विद्यापीठ पञ्चाङ्ग ◆		◆ विषय-सूची ◆		◆ विक्रम संवत् २०८० ◆		
साक्षिप्त-परिचय		विशेषज्ञ-द्यानदर्शा-चक्र	१५१	चन्द्रवास, योगीवास, दिक्षिण, नक्षत्र-शृणु,		
प्रसादवना		नवीन-पाचन वर्ष-प्रवेश सारिणी	१५२	लग्न-विचार व याता प्रस्थान-विचार	१६१-१७१	
विद्यापीठ-पञ्चाङ्ग की विषय सूची		पुष्टदर्शा, योगीनीमुद्रादर्शा, विराशिष्ठा-चक्र	१५२	राहुमुखदर्शन, गुहारथ विचार,		
संबंधित-फल		वर्षप्रकल्प निर्माण-विचार	१५३	चौराहिया मुहूर्त-चक्र	१७०-१७१	
ग्रनि की सावेसाती व वैद्या का फल		लग्नसारिणी अक्षांश	१५४	चैत्रादि मासानुसार गुहारथ फल, चत्स-चक्र,		
आव-व्यय बोधक चक्र		दशमलानसारिणी	१५०	कृआं खोदेन या नल लगाने का मुहूर्त	१७२	
मध्यादि द्वादश राशियों का मासिक फल		१७-३८ प्रहमेशी-चक्र, सिद्धादियोग-चक्र	१५१	द्वारस्थापन विचार, जाण-नून गृह प्रवेश-		
विं संवत् २०८० के ज्ञन-पर्व एवं उत्सव		३३-४४ अन्याशादिसंज्ञा, शिववास	१५२	मुहूर्त, कुम्भ-चक्र व दूकान (विधिणा) मुहूर्त	१७३	
विं संवत् २०८० के वार्षिक तात्त्व-पर्वों की सूची		४३-४४ विविध मुहूर्तों का विचार	१५३	व्यापार प्रारम्भ, नौकरी, पुकारदा, यानीरी,		
विं संवत् २०८० के राशि एवं नक्षत्रवर्ष वि. सं.-२०८०		गर्भांधन, पुंसवत्-सीमत, स्तनपान का मुहूर्त	१५४	पशुक्रय, मन्दिर निरामा व जलाशयारमसुप्रतिष्ठा		
होतों के वक्रत-मार्गत्व एवं उदयास्त		जलपूजन, जातकर्म-नामकरण, निष्क्रमण तथा	१५५	मुहूर्त, यजनीय-चुल्लिचक्र विचार, हल प्रवहण		
वर्धमित्रसिद्धि-पुरुष्य-विष्युष्य-निष्युष्य		भूमि पर प्रथमोपवेशन के मुहूर्त-विचार	१५६	मुहूर्त, बीजवन्पन मुहूर्त, गह नक्षत्र से जीवोनि चक्र,		
पुष्कर, सिद्धियोग,		अनन्प्राशन, कणिकेय तथा मुण्डन संस्कार का विचार	१५७	ग्रहों के दान सम्बद्ध, जपसंखा, औषधसेवन मुहूर्त,		
वर्धमित्रयोग एवं रवियोग		नासिकाछेदन, अस्त्राराम्य	१५८	वाहन आरोहण मुहूर्त	१७४-१७५	
संवत् २०८० नौकरी चक्र		विद्यारथमुहूर्त का विचार	१५९	मन एवं हवन-सामिया ज्ञानार्थ-चक्र		
संवत् २०८० के ग्रनि चक्र		उपनयन, विवाह-संस्कार का विचार	१६०	रेखांश एवं देशान्तर	१७७-१७८	
संवत् २०८० के विवरण		चर-कन्या का जन्मप्रतिका मेलापक, दुष्टभक्त,	१६१	भारत के प्रमुख नारों के पलभा, अक्षांश,		
संवत् २०८० के विवरण		गणपत्त, गहकृत का परिहार	१६२	लग्नाशन के लिए पलभा से चरखण्ड तथा		
संवत् २०८० के विवरण		नाड़ी-गणदोष का परिहार, वरवरण, कन्या-वरण	१६३	स्वदेशीय उदयमन बनाने की विधि		
संवत् २०८० के विवरण		का मुहूर्त एवं विवाह मुहूर्तोपयोगी विवलशुर्जिद् १५८	१६४	लघुत्रित्य सारिणी		
संवत् २०८० के विवरण		वधूप्रवेश तथा द्विरागमन-मुहूर्त का विचार	१६५	अभीष्ट स्थान के सूवोदय तथा इष्टकाल बनाने		
संवत् २०८० के विवरण		जन्माश्रम-चक्र	१६६	की विधि	१७१-१८०	
संवत् २०८० के विवरण		मेलापक-सारिणी	१६७-१६८	विभिन्न अंगों पर पत्नी (छिपकली/किरत)	१८१-१८२	
संवत् २०८० के विवरण		१६८-१६९	गिरने का फल एवं उपचार, छींक विचार	१८३	जन्मकृण्डली एवं वर्ष कुण्डली में	
संवत् २०८० के विवरण		१७०-१७१	द्वादशमासवस्थसूचीदि ग्रहों का फल	१८४		
संवत् २०८० के विवरण		१७१-१७२				
संवत् २०८० के विवरण		१७२-१७३				
संवत् २०८० के विवरण		१७३-१७४				
संवत् २०८० के विवरण		१७४-१७५				
संवत् २०८० के विवरण		१७५-१७६				
संवत् २०८० के विवरण		१७६-१७७				
संवत् २०८० के विवरण		१७७-१७८				
संवत् २०८० के विवरण		१७८-१७९				
संवत् २०८० के विवरण		१७९-१८०				
संवत् २०८० के विवरण		१८०-१८१				
संवत् २०८० के विवरण		१८१-१८२				
संवत् २०८० के विवरण		१८२-१८३				
संवत् २०८० के विवरण		१८३-१८४				
संवत् २०८० के विवरण		१८४-१८५				
संवत् २०८० के विवरण		१८५-१८६				
संवत् २०८० के विवरण		१८६-१८७				
संवत् २०८० के विवरण		१८७-१८८				
संवत् २०८० के विवरण		१८८-१८९				
संवत् २०८० के विवरण		१८९-१९०				
संवत् २०८० के विवरण		१९०-१९१				
संवत् २०८० के विवरण		१९१-१९२				
संवत् २०८० के विवरण		१९२-१९३				
संवत् २०८० के विवरण		१९३-१९४				
संवत् २०८० के विवरण		१९४-१९५				
संवत् २०८० के विवरण		१९५-१९६				
संवत् २०८० के विवरण		१९६-१९७				
संवत् २०८० के विवरण		१९७-१९८				
संवत् २०८० के विवरण		१९८-१९९				
संवत् २०८० के विवरण		१९९-२००				
संवत् २०८० के विवरण		२००-२०१				
संवत् २०८० के विवरण		२०१-२०२				
संवत् २०८० के विवरण		२०२-२०३				
संवत् २०८० के विवरण		२०३-२०४				
संवत् २०८० के विवरण		२०४-२०५				
संवत् २०८० के विवरण		२०५-२०६				
संवत् २०८० के विवरण		२०६-२०७				
संवत् २०८० के विवरण		२०७-२०८				
संवत् २०८० के विवरण		२०८-२०९				
संवत् २०८० के विवरण		२०९-२१०				
संवत् २०८० के विवरण		२१०-२११				
संवत् २०८० के विवरण		२११-२१२				
संवत् २०८० के विवरण		२१२-२१३				
संवत् २०८० के विवरण		२१३-२१४				
संवत् २०८० के विवरण		२१४-२१५				
संवत् २०८० के विवरण		२१५-२१६				
संवत् २०८० के विवरण		२१६-२१७				
संवत् २०८० के विवरण		२१७-२१८				
संवत् २०८० के विवरण		२१८-२१९				
संवत् २०८० के विवरण		२१९-२२०				
संवत् २०८० के विवरण		२२०-२२१				
संवत् २०८० के विवरण		२२१-२२२				
संवत् २०८० के विवरण		२२२-२२३				
संवत् २०८० के विवरण		२२३-२२४				
संवत् २०८० के विवरण		२२४-२२५				
संवत् २०८० के विवरण		२२५-२२६				
संवत् २०८० के विवरण		२२६-२२७				
संवत् २०८० के विवरण		२२७-२२८				
संवत् २०८० के विवरण		२२८-२२९				
संवत् २०८० के विवरण		२२९-२३०				
संवत् २०८० के विवरण		२३०-२३१				
संवत् २०८० के विवरण		२३१-२३२				
संवत् २०८० के विवरण		२३२-२३३				
संवत् २०८० के विवरण		२३३-२३४				
संवत् २०८० के विवरण		२३४-२३५				
संवत् २०८० के विवरण		२३५-२३६				
संवत् २०८० के विवरण		२३६-२३७				
संवत् २०८० के विवरण		२३७-२३८				
संवत् २०८० के विवरण		२३८-२३९				
संवत् २०८० के विवरण		२३९-२४०				
संवत् २०८० के विवरण		२४०-२४१				
संवत् २०८० के विवरण		२४१-२४२				
संवत् २०८० के विवरण		२४२-२४३				
संवत् २०८० के विवरण		२४३-२४४				
संवत् २०८० के विवरण		२४४-२४५				
संवत् २०८० के विवरण		२४५-२४६				
संवत् २०८० के विवरण		२४६-२४७				
संवत् २०८० के विवरण		२४७-२४८				
संवत् २०८० के विवरण		२४८-२४९				
संवत् २०८० के विवरण		२४९-२५०				
संवत् २०८० के विवरण		२५०-२५१				
संवत् २०८० के विवरण		२५१-२५२				
संवत् २०८० के विवरण		२५२-२५३				
संवत् २०८० के विवरण		२५३-२५४				
संवत् २०८० के विवरण		२५४-२५५				
संवत् २०८० के विवरण		२५५-२५६				
संवत् २०८० के विवरण		२५६-२५७				
संवत् २०८० के विवरण		२५७-२५८				
संवत् २०८० के विवरण		२५८-२५९				
संवत् २०८० के विवरण		२५९-२६०				
संवत् २०८० के विवरण		२६०-२६१				
संवत् २०८० के विवरण		२६१-२६२				
संवत् २०८० के विवरण		२६२-२६३				
संवत् २०८० के विवरण		२६३-२६४				
संवत् २०८० के विवरण		२६४-२६५				
संवत् २०८० के विवरण		२६५-२६६				
संवत् २०८० के विवरण		२६६-२६७				
संवत् २०८० के विवरण		२६७-२६८				
संवत् २०८० के विवरण		२६८-२६९				
संवत् २०८० के विवरण		२६९-२७०				
संवत् २०८० के विवरण		२७०-२७१				
संवत् २०८० के विवरण		२७१-२७२				
संवत् २०८० के विवरण		२७२-२७३				
संवत् २०८० के विवरण		२७३-२७४				
संवत् २०८० के विवरण		२७४-२७५				
संवत् २०८० के विवरण		२७५-२७६				
संवत् २०८० के विवरण		२७६-२७७				
संवत् २०८० के विवरण		२७७-२७८				
संवत् २०८० के विवरण		२७८-२७९				
संवत् २०८० के विवरण		२७९-२८०				
संवत् २०८० के विवरण		२८०-२८१				
संवत् २०८० के विवरण		२८१-२८२				
संवत् २०८० के विवरण		२८२-२८३				
संवत् २०८० के विवरण		२८३-२८४				
संवत् २०८० के विवरण		२८४-२८५				
संवत् २०८० के विवरण		२८५-२८६				
संवत् २०८० के विवरण		२८६-२८७				
संवत् २०८० के विवरण		२८७-२८८				
संवत् २०८० के विवरण		२८८-२८९				
संवत् २०८० के विवरण		२८९-२९०				
संवत् २०८० के विवरण		२९०-२९१				
संवत् २०८० के विवरण		२९१-२९२				
संवत् २०८० के विवरण		२९२-२९३				
संवत् २०८० के विवरण		२९३-२९४				
संवत् २०८० के विवरण		२९४-२९५				
संवत् २०८० के विवरण		२९५-२९६				
संवत् २०८० के विवरण		२९६-२९७				
संवत् २०८० के विवरण		२९७-२९८				
संवत् २०८० के विवरण		२९८-२९९				
संवत् २०८० के विवरण		२९९-२१०				
संवत् २०८० के विवरण		१००-१११				
संवत् २०८० के विवरण		१११-१२०				
संवत् २०८० के विवरण		१२०-१३१				
संवत् २०८० के विवरण		१३१-१४०				
संवत् २०८० के विवरण		१४०-१५९				

श्रीमद्भागवत
श्रीवागेवत

मोमसूरीनलाकल्पामकल्यामिनुशेखराम्।
पञ्चविन्दु हे: शक्तिं पञ्चकुचकरी नुमः॥
पञ्चदेवास्तको भूत्वा पञ्चशक्तिसमन्वितः॥
पञ्चग्रहिमधिज्ञाय प्रपञ्चराहितोऽवत् ॥

महालयावटकाशाद्वोपाकर्मार्छिपि कर्म यत।
स्पष्टमासे विशेषाद्याविहितं वर्जयेन्मले॥

आचार्य ब्रह्मस्माति के अनुसार आन्याधान, प्रतिष्ठा, यज्ञ, दानवतादि, वेदवृत, चृष्णोत्सर्ग, चूडाकर्म, यज्ञोपवित, मांगल्य और अभिषेक मल मास में नहीं करना चाहिए। यथोक्तम्-

अन्याधानप्रतिष्ठा च यज्ञानवतानि च।

वेववत्वृष्टोत्सर्गचूडाकरणमेखला: ॥

माङ्गल्यमधिषेकं च मलमासे विवर्जयेत् ॥

अधिक मास में करणीय कर्म - मनुस्मृति में कहा गया है कि तीर्थशाढ़, दर्शशाढ़, प्रेतशाढ़ सपिण्डीकरण, चन्द्रसूर्यग्रहणीय स्नान अधिकमास में करना चाहिए। यथोक्तम् -

तीर्थशाढ़ं दर्शशाढ़ं प्रेतशाढ़ं सपिण्डनम् ।

चन्द्रसूर्यग्रहे स्नानं मलमासे विधीयते ।

ऋषि पराशर के अनुसार अधिक मास में गर्भस्थ की मास संज्ञा, वद्धापन कार्य, सेवक की मास संज्ञा, प्रेत कार्य, मासिक कर्म, सपिण्डीकरण और प्रतिदिन करने वाले कार्य का लाग नहीं करना चाहिए। यथोक्तम् -

गर्भे वार्षिके भूत्ये प्रेतकर्मणि मासिके ।

सपिण्डीकरणे नित्ये नाधिमासं विवर्जयेत् ॥

महूर्त्तिगणपति के अनुसार गर्भादानादि संस्कार में, बालक के निप्राशन समय में गुरु शुक्र अस्तत्व और मलमास जनित दोष नहीं होता । क्योंकि इसमें काल की प्रधानता होने से उक्त कार्य मलमास के किये गए सकते हैं । यथोक्तम् -

गर्भधानादिसंस्कारे तथानप्राशने शिशोः ।
न तत्र गुरुशुक्रास्तमलमासादिदृष्ट्याम् ॥

आवाण "अधिक मास" का फल - विक्रम संवत् २०८० में आवाण अधिक मास दिनांक १८ जुलाई मांगलवार से प्रारम्भ होकर १६ अप्रृत वृश्चार तक व्याप्त रहेगा । आवाण अधिक मास का फल इस प्रकार वर्णित है - "सर्वकामसमृद्धिः स्यात् श्रावणे शुद्धवृद्धयः ॥"

अर्थात् जिस वर्ष आवाण अधिक मास होता तो समस्त कार्यों में समृद्धि होती है । और शत्रुओं की वृद्धि होती है ।

में भगवान विष्णु एवं शिव दोनों की ही उपासना एवं आराध्याना करने से आध्यात्मिक बल की प्राप्ति होती है अधिकमास में स्नान, दान एवं व्रत करने से अनन्तफल की प्राप्ति होती है । इस मास में एक दिन क्रत करने का फल सौ वर्ष व्रत करने के फल के समान पुण्यदार्य बतलाया गया है। यथोक्तम् -

सम्यक् चीर्णेन तपसा शतवर्षमितेन च ।

यत्कलं लभते विष नासेऽस्मिन्नेकवासरात् ॥

आचार्यों ने समस्त पापों का नाश करने के लिए अधिक मास में ब्रत, पूजन, स्नानदानादि के विविध विधान बतलाए हैं । भगवान विष्णु की उपासना हेतु विष्णुस्त्रनाम, श्रीमूर्त्त, पुरुषमूर्त्त आदि का पाठ करने से अभीष्ट फल की प्राप्ति होती है । भगवान विष्णु की उपासना इस मास में विशेष रूप से करने के कारण इस मास को पुरुषोत्तम मास भी कहते हैं । अधिक मास में जो व्यक्ति श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक ब्रत-उपवास श्रीविष्णुपूजन, शिवपूजन, पुरुषोत्तम माहात्म्य का पाठ, दानादि शुभ कर्म करता है, उसे इस लोक में मन बाँधित फलों की प्राप्ति होती है और अन्त में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

डॉ. राण्यम् चतुर्वेदी
एसोसिएट प्रोफेसर
(ज्योतिष-विभाग)